GOVERNMENTDEGREE COLLEGE

ZAHEERABAD, SANGAREDDY (DIST).

TELANGANA-502220

STUDENTS

Study Project

“BHARATH KI AZADHI MEIN HINDI AHITYA KARONKA YOGDAN“

CCE

JIGNASA

PROJECT WORK

Department of Hindi

Under the Supervision of:

RATHOD MADAN(M.A, M.Phil)
lecturer in Hindi

शासकीय महाविद्यालय, जहरीबाद

(उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (तेलंगाना)

छात्रों द्वारा परियोजना कार्य

शीर्षक: भारत की आजादी में हिंदी साहित्यकारों का योगदान

निर्देशक

सहायक प्राध्यापक मदन राठोड़ (अतिथि)

प्रस्तुतकर्ता

1. Rathod Vijay Kumar - 602617129511
2. Rathod Tulsiram - 602617129510
3. Chowan Srinivas - 602618405004
4. Mohammed Azaroddin - 602618405016
5. N. Malleshwari - 602618445009

भारत की आजादी में हिंदी साहित्यकारों का योगदान (परियोजना कार्य)

प्रस्तावना (Introduction)

भारत देश जब परतंत्र था तब हमारे देश पर अनेक विदेशियों ने अत्याचार अन्याय, पक्षपात, हृदय हीनता आदि आदि चरम सीमा पर थे। और भारत पर हजारों वर्ष राज किया। इतना ही नहीं बल्कि देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति को खोखला बना दिया था। और यहाँ की संस्कृति और सभ्यता को निश्चित ही नष्ट किया था।

भारत देश स्वतंत्र बनाने के पीछे कुछ राष्ट्र कवियों का योगदान रहा है और उनकी हृदय की उमड़ की और धड़कन को हम सुन सकते हैं। उन्होंने ऐसे साहित्य का निर्माण किया कि जनता की आँखों में आँसू बहें और खून में कूट-कूट कर क्रांति का बीज बोया। ऐसे राष्ट्र कवि के बारे में हम पढेंगे।

इससे हमें इस परियोजना कार्य में पता चलता है कि देश की आजादी में हिंदी साहित्यकारों की क्या भूमिका रही, हमें पूरा पढ़ने से पता चलेगा और सभी लोग इसको पढ़कर लाभान्वित होंगे और देश को स्वंतत्र बनाने में कितनी मेहनत करनी पढ़ेगी, कैसे-कैसे साहित्य की रचना करनी पढ़ी, यह हम समझ सकते हैं। इस राष्ट्र कवियों को हृदय से बधाई देते है कि मैं हमें आजाद देश में खुली साँस मे जीवन जीने का अधिकार दिया।

उद्देश्य : (objectives)

इस परियोजना कार्य के पीछे ऐसा उद्देश्य है कि भारत देश के आजादी के पीछे हमारे राष्ट्रीय कवियों का योगदान रहा है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्ता अपनी रचना 'भारत भारती' में लिखा हैं-

"हम कौन थे क्या हो गये क्या होगें अभी
अवे सब मिलकर सुधारे यह समस्याएँ सभी।"

इस पंक्तियों के अनुसार आज विज्ञान का जमाना है। इसके पूर्व का भारत देखते है तो हमारी परिस्थिति क्या थी? आज देश की स्थिति को देखा जाय तो आज भी बाहरी आक्रमणकारी आक्रमण कर रहे हैं। जम्मु और कश्मिर पर पाकिस्तान आक्रमण करने की कोशिश कर रहा है, चीन भी आक्रमण करने

की कोशिश करता है। देश को आजादी दिलाने में जिन राष्ट्रीय कवियों का योगदान रहा, उनको न भूलकर देश की आजादी और अखंड़ता को नहीं भूलना चाहिए। देश का साहित्य, देश की रक्षा, हमारी रक्षा है। इस परियोजना कार्य का उद्देश्य इस प्रकार है।

साहित्य का अवलोकन : (Review of literature)

कक्षा परियोजना कार्य के लिए साहित्य का अवलोकन इस प्रकार किया गया है। भारत में बहुभाषी, विविध वेषभूषाएँ, बहुधर्मीय, बहुजातीय लोग रहने से कोई एक भाषा का प्रयोग नहीं था। इसलिए भारत के साहित्य के अवलोकन के लिए किसी एक भाषा की आवश्यकता थी। आगे चलकर कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास और अन्य कवियों द्वारा भाषा की सुधारणा करके हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया गया। इसलिए देश की परिस्थितियाँ राजनीतिक हो या सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक अच्छी नहीं थी, इसलिए देश का वातावरण ठीक न होने के कारण हमारा देश दूसरों के अधीन था। महात्मा गांधी उनके साथी राजगोपाल चारी और उनके बड़े पुत्र देवदास गांधी हिंदी का प्रचार-प्रसार किया। तथा हमारे राष्ट्रीय कवि साहित्य द्वारा गाँव-गाँव तक क्रांति का नारा लगाया और बच्चों से लेकर वयोवृद्ध तक स्वतंत्र का बीज बोया। इस प्रकार हमारे देश में साहित्य का अवलोकन रहा।

शोध पद्धति : (Research mathodology)

इस परियोजना कार्य की शोद्ध पद्धति सिधी और बहुत सरल है। इस कार्य के लिए किताबों द्वारा शोध कार्य करके लिखा गया और इस शोध पद्धति को संशोधनात्मक शोध पद्धति भी कहा जाता है। दूसरी और वार्तालाप शोध पद्धति हो सकती है। इस शोध पद्धति में कोई भी सीमा नहीं है क्योंकि भारत की आजादी के लिए आदिकालीन कवियों से लेकर आधुनिक काल के राष्ट्रीय कवियों तक को भी उदाहरण लिया जाता है। लेकिन इस शोध कार्य के लिए हमने दस से लेकर बारह राष्ट्रीय कवियों को लिया गया है। भारत देश स्वतंत्र के लिए उनका योगदान अधिक प्रमाण में रहा है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, रूपनारायण पाण्डे आदि प्रमुख रूप से योगदान रहा है। इनके साहित्य का प्रभाव देश की जनता पर पड़ा आजादी के लिए बहुत ही सरल और आसान हुआ।

मूल परिशीलन : (Data analysis)

भारतेंदु युग में देश भक्ति केवल भाषा भोजन तथा वेश तक ही सीमित थी, उसके साथ-साथ भारतेदु युग के कवियों ने देश-प्रेम की रचनाओं के माध्यम से जन-मानस में राष्ट्रीय भावना का बीजारोपन किया। इस युग में देश प्रेम प्रधान रचनाओं द्वारा राष्ट्रीय जागरण का प्रथम उद्घोष किया। भारतेंदु 'भारत की दूर्दशा' में लिखते हैं-

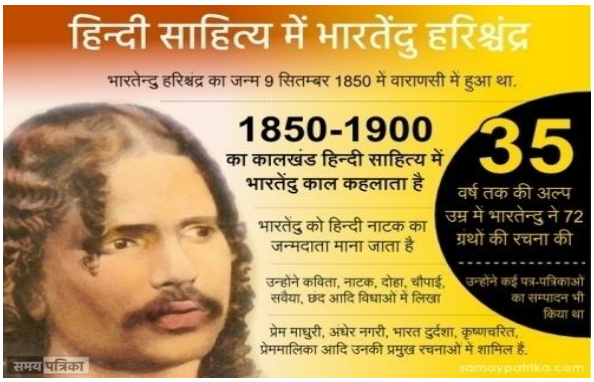

"गयो राज, धन, तेज, शेष, बल, शान, नसाई
बुद्धि, वीरता, श्री, उच्छाह, सूरत बिलाई।
आलस, कायरपनों, निरुघमता अब छाई,
रही मुढ़ता, बैर, परस्पर, कलह लढ़ाई।"

द्वीवेदी युग में देश भक्ति को एक व्यापक आधार मिला। इस युग को राष्ट्रीय जागरण काल की संज्ञा दी है। देश भक्ति विषयक-अनेक लघु कविताएँ लिखी गई। इस काल में देश भक्ति की सुंदर अभिव्यक्ति मिली है।

राष्ट्रीय कविता में एकता, त्याग, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा और बंधुता के दर्शन होते हैं। रूप नारायन पाण्डे की कविता का एक उदाहरण देखिए-

"जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, मुसलमान, सिख, ईसाई।
कोटि कण्ठ से मिलकर कह दो हम सब है भाई-भाई।
पुण्य भूमि है, स्वर्ग भूमि है, जन्मभूमि है देश यही।
इससे बढ़कर या ऐसा ही दुनिया में है जगह नहीं।"

राष्ट्रीय कविता ने देश की जनता में चेतना और जागृति का स्वर फूँक दिया। उसी के परिणाम स्वरूप आज हम सभी स्वतंत्रता के माहोल में साँस ले रहे हैं। माखनलाल चतुर्वेदी गांधीजी से प्रभावित होकर स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय सेनानी बने और कई बार जेल भी गए।

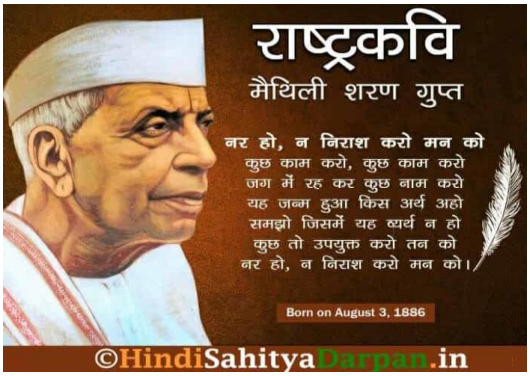

पंडित रामनरेश त्रिपाठीजी के कविताओं में राष्ट्रीय भावनाओं का भंडार है। नवयुवकों मे देशभक्ति का संचार करने के लिए अपने कविताएँ लिखी थी। नवयुवकों में देश-प्रेम का संचार करना कविता का लक्ष्य है। देश में रचनात्मक परिवर्तन लाना चाहते हैं-

"रोते वृद्ध कहाँ है जीवन
का अनमोल सहारा ?
रोकर गिरे अचेत युवक
है साथी कहाँ हमारा ?
कलप उठें सब प्रबल
हमारा रक्षक मित्र कहाँ है ?"

रामधारी सिंह दिनकर जी के कविताओं पर राष्ट्रीयता की अधिक छाप है। इनकी 'कलम और तलवार' एक फुटकल कविता है। कवि अपनी रचनाओं के द्वारा जनता में देश भक्ति को जागृत कर सकता है। क्रांति के बीज बो सकता है, कवि अपनी कविता में नाना प्रकार के प्रश्न करते हैं-

"दो में से तुम्हें चाहिए, कलम या कि तलवार ?
मन में उँचे भाव की तन में शक्ति अजय अपार ?
अन्ध कक्ष में बैठे रचोगे बहार या मैदान ?
जला ज्ञान का दीप सिर्फ फैलाओगे उजियाली ?
अथवा उठा कृपान करोगे घर की भी रखवाली" ?

श्री सोहनलाल द्विवेदी हिंदी के राष्ट्रीय कवि रहे। वे महात्मा गांधी जी से प्रभावित थे।

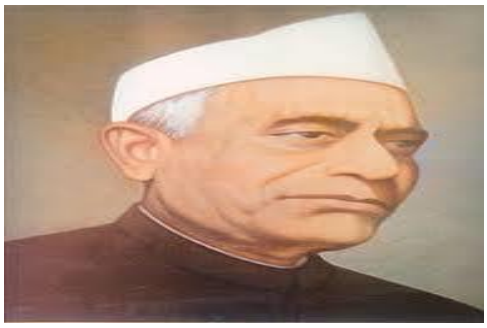

उनकी 'प्रभात फेरी' रचना में राष्ट्रीय जागरण का चित्रण है। उन्होंने महात्मा की प्रशंसा में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ की है। 'युगावतार गांधी' इसी प्रकार की एक कविता है। जिसमें गांधी जी को युग पुरूष माना गया है। गाँधीजी जिस मार्गपर चलते है और लोग भी उसी मार्ग को अपनाते हैं-

"चल पड़े जिधर दो डग मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गये कोटि यूग उसी ओर।"

आधुनिक युग की महिमा कवि-कवियित्रियों में प्रमुख नाम सुभद्रा कुमारी चौहान का आता है। इन्होंने देश भक्तिपूर्ण रचनाएँ की। 'झांसी की रानी' तथा 'वीरों का कैसा हो बसंत' इनकी अत्यंत प्रसिद्ध रचनाएँ है। 'झांसी की रानी' रचना का एक उदाहरण देखिए-

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी।
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी।
बुंदेले हरबोलो से मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी।"

राष्ट्रीय चेनता के विकास के साथ स्वभाषा को राजपद दिलाने की माँग उठी। भारतेदुं हरिश्चंद्र ने नारा लगाया-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।"

पंडित मदनमोहन मालवीय के सतत प्रयत्न से 1901 में संयुक्त प्रांत की कचहरी की भाषा के रूप में हिंदी को ऊर्दू के साथ समान अधिकार मिला।

निष्कर्ष : (conclusions)

आज भारतीय साहित्यकारों का पवित्र कर्तव्य है कि वे ऐसे साहित्य का निर्माण करें जिससे राष्ट्र के आत्मगौरव और गरिमा की वृद्धि हो। भारत वर्ष की उन्नति, उसकी गौरव गरिमा, राष्ट्रभाषा हिंदी के साहित्य की उच्चता पर निर्भय है। साहित्य की अवनत अवस्था में कोई भी देश उन्नति नहीं कर सकता, यह नि:संदेह सत्य है।